डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय - संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र

Date 10/07/20

कादम्बरी - शुकनासोपदेश

गद्यांश व्याख्या :-

भवादृशा: एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम् । अपगतमले स्फटिकमणाविव रजनिकरगभस्तयो विशन्ति सुखेनोपदेशगुणा: । गुरुवचनममलमपि सलिलमिव महदुपजनयति श्रवणस्थितं शूलमभव्यस्य इतरस्य तु करिण इव शङ्खाभरणमाननशोभा-समुदयमधिकतरम् उपजनयति ।

सान्वय व्याख्या :- (भवादृशा: एव उपदेशानाम् भाजनानि भवन्ति) आप जैसे व्यक्ति ही उपदेशों के पात्र होते हैं। क्योंकि (स्फटिकमणाविव रजनिकरगभस्तयो) स्फटिकमणि में चन्द्रमा की किरणों के समान (उपदेश गुणा:) उपदेश के गुण (अपगतमले हि मनसि) मलरहित मन में (सुखेन विशन्ति) सरलता से प्रवेश कर जाते हैं। (श्रवणस्थितं सलिलमिव) कान में स्थित स्वच्छ जल के समान (अभव्यस्य (अमलं गुरुवचनमपि) असज्जन के कर्णगोचर हुआ मलरहित भी गुरु का वचन (महत् शूलम् उपजनयति) अत्यन्त पीड़ा उत्पन्न करता है। किन्तु वही (इतरस्य तु) दूसरे व्यक्ति के (आननशोभासमुदयम्) मुख की शोभा समृद्धि को (करिण इव शङ्खाभरणम्) हाथी के मुख के शोभा संभार को शंख के आभूषण के समान (अधिकतरम् उपजनयति) और

Scanned with CamScanner

अधिक बढ़ा देता है।

भावार्थ:- आप जैसे व्यक्ति ही उपदेशों के उपयुक्त पात्र होते हैं क्योंकि स्वच्छ स्फटिक-मणि में चन्द्रमा की किरणों के समान उपदेश के गुण मलरहित मन में सरलता से प्रवेश कर जाते हैं।

निर्मल चित्त में उपदेश सुखपूर्वक प्रविष्ट हो जाते हैं, यह कहकर अब इसके विपरीत कवि शंका करता है कि कलुषित अन्तःकरण वाले व्यक्ति पर उपदेश का क्या प्रभाव होगा? पानी कितना ही निर्मल क्यों न हो, वह व्यक्ति के कान में पड़ कर तो शूल ही उत्पन्न करता है। अशिष्ट व्यक्ति के कान में पड़ा उपदेश भी उसकी प्रकृति के प्रतिकूल होने के कारण अत्यन्त कष्टदायी ही होता है तथा वह उसके क्रोध को ही भड़काएगा- "उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न तु शान्तये" (हितोप०3.4) हाथियों के दृष्टिदोष को रोकने के लिए उनके मस्तक पर शंखों के बने गहने पहनाए जाते हैं। गुरु का उपदेश भी दूषित दृष्टिकोण को दूर कर कर्तव्य-अकर्तव्य को पहचानने की पैनी दृष्टि प्रदान करता है। शंखों के आभूषण अपने सौन्दर्य से हाथियों के मुख की शोभा को बढ़ाते हैं। शंखधवल गुरु के उपदेश को सुनने से भव्य व साधु व्यक्ति हर्ष से

Scanned with CamScanner

प्रफुल्लित होता है। और इस प्रकार उसके चेहरे की कान्ति बढ़ जाती है। यहाँ सज्जन व्यक्ति की तुलना हाथी से तथा गुरु के उपदेश की तुलना शंखाभरण से की गई है अतः उपमा अलंकार है।

टिप्पणी :- भवादृशाः - भवानिव दृश्यते यः स भवादृशः (भवत् + दृश् + क)। अपगतमले - अपगतं (अप + गम् + क्त) मलं यस्मात् तत् (बहु०) तस्मिन्। रजनिकरगभस्तयः - रजनीं करोति इति रजनिकरः (बहु०) रजनिकरस्य गभस्तयः (ष० तत्पु०)। उपदेशगुणाः - उपदेशानां गुणाः (ष० तत्पु०)। गुरुवचनम् - गुरोः वचनम् (ष० तत्पु०)। अमलम् - न विद्यते मलं यस्मिन् तत् (नञ्, बहु०)। श्रवणस्थितम् - श्रवणे स्थित (स० तत्पु०)। उपजनयति - उप + जन् + णिच् लट् प्र० पु० ए०। अभव्यस्य - न भव्यः अभव्यः (नञ्) तस्य, 'भव्यः' शब्द 'भव्यगेय०' सूत्र से कर्तरि निपातित है, अर्थ है - साधु, सज्जन। 'भव्य' का अर्थ योग्य भी है - 'भव्यं शुभे च सत्ये च योग्ये'।

करिणः - करः शुण्डादण्डः अस्यास्तीति करिन् (पुं०) (कर + इनि) ष० ए०। शङ्खाभरणम् - शङ्ख निर्मितं आभरणम् (म० प० लो०)। आननशोभासमुदयम् - शोभायाः समुदयः (सम् + उत् + इ + अच्) शोभासमुदयः (ष० तत्पु०) आननस्य शोभासमुदयः (ष० तत्पु०) तम्।